E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

पर्जन्य देवता का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी,

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

ऋग्वेद संहिता के मात्र तीन सूक्त सम्पूर्णतः पर्जन्य के लिए कहे गये हैं तथा इनका नाम भी मात्र तीस ही बार आया हुआ है। पर्जन्य के स्तवन का आधार शुद्ध भौतिक है।निरुक्तकार यास्क के अनुसार 'तृप्' धातु से इस शब्द का व्युत्पन्न माना गया है। पर्जन्य की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

वृष्टि का देवता– पर्जन्य वृष्टि करने वाला देव है। इसकी प्रधान विशेषता जल बरसाना ही हैं। यह जलमय रथ पर आरूढ़ हाकर भ्रमण करता है। पर्जन्य अपने जलमय रथ पर बैठकर जल से आपूर्ण मशक को नीचे मुखकर ढीला कर देते हैं। पर्याप्त वृष्टि के लिए पर्जन्य से बार-बार प्रार्थना की गई है। जलचर्म को ढीला करके उसे नीचे की ओर खींचकर वृष्टि करता है। पर्जन्य शीघ्र वृष्टि कराने वाला देवता है। जब पर्जन्य आकाश को वर्षायुक्त मेघ से युक्त कर देता है तब यह सिंह की भाँति गर्जन करता है। पर्जन्य अधिक समय तक होती हुई वर्षा को रोकता है। जब पर्जन्य जल से पृथिवी की रक्षा करते हैं तो हवायें बहती हैं, और बिजलियाँ गिरती हैं। पर्जन्य अनेक देवताओं से सम्बद्ध हैं। वे वात, मरुत् और द्यौस् से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं। सोम उनका पुत्र है क्योंकि वह पर्जन्य के द्वारा समृद्ध होता है। इसके स्वरूप के विषय में मतभेद है। यास्क पर्जन्य के चार अर्थ-क) आद्यन्त विपर्यय वाला, ख) दूसरों को जीतने वाला, ग) उत्पन्न करने वाला तथा घ) रसों को प्रेरित करने वाला करते हैं। ब्लूमफील्ड पर्जन्य को परिजन के रूप में परिणत कर लोगों को परिवृत करने वाला मानते हैं। मैक्डानल पर्जन्य को गरजते हुए मेघ कहते हैं।

विश्व का पिता– पर्जन्य को विश्व का पिता एवं पृथिवी को माता कहा गया है पर्जन्य ही वर्षा द्वारा पृथिवी में जलरूपी वीर्य धारण करके लोगों के लिए अन्नादि खाद्य पदार्थों की उत्पत्ति का प्रधान कारण कनता है। अतः इसको पिता कहना अनुचित नहीं है।

कार्य– पर्जन्य देव का मुख्य कार्य तो वृष्टि करना है, परन्तु साथ ही कतिपय अन्य कार्य भी इसके द्वारा किये जाते हैं। दुष्काल (अकाल) को नष्ट करना, वज्रपात द्वारा वृक्षों को नष्ट कर डालना तथा राक्षसों का बधकर डालना भी पर्जन्य देवता के प्रधान कार्यों में गिने जाते हैं। पर्जन्य देव की महाप्रलयकारी शक्ति के सामने सम्पूर्ण चराचर जगत् नतमस्तक हो जाता है। पृथिवी को सत्त्वयुक्त बनाना, औषधियों को पल्लवित-पुष्पित करना इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। इस प्रकार पर्जन्य वनस्पतियों को उत्पन्न करते हैं। पृथिवी में ही बीज धारण कर वनस्पतियों और औषधियों को उत्पन्न करने के कारण पर्जन्य पृथिवी के पति हैं।

देवताओं से सम्बन्ध– पर्जन्य अन्य अनेक देवताओं के साथ घनिष्ठ रूप सम्बन्धित है। मरुत् एवं वात देवताओं से यह अपना अभिन्न सम्बन्ध रखता है। ऋग्वेद के दो मन्त्रों में इसकी स्तुति अग्नि के साथ भी की गयी है। वर्षा के देवता के रूप में इसकी तुलना इन्द्र से की गयी है। पृथिवी को पर्जन्य की पत्नी कहा गया है, परन्तु इसकी पत्नी के रूप में 'वशा' का भी उल्लेख मिलता है। पर्जन्य को सोम का पुत्र कहा गया है।

प्राकृतिक आधार- इस तथ्य से किसी भी विद्वान् को आपत्ति नहीं होनी चाहिए कि पर्जन्य देव निश्चित रूप से भौतिक पर्जन्य (बादल) के मानवीकृत रूप हैं। प्राचीन ऋषियों को वर्षा एवं गर्जन की शक्ति के रूप में पर्जन्य देवता का दर्शन हुआ है।